सृजन

हौंसलों की उड़ान . . .

अजय सिंघल

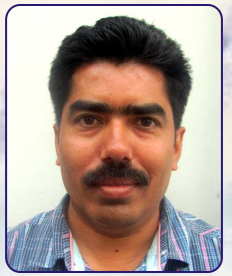

"कौन बूढ़ा? अरे सर ! बूढ़ा होने का वक्त किसके पास है। अभी तो बहुत काम करना है।" यूँ ही किसी बातचीत के दौरान इस पुस्तक के लेखक द्वारा कहे गये ये शब्द उस शख़्स की मानसिक बुनावट, जज़्बे और जुनून को बयाँ करते हैं। कहना न होगा कि यही मानसिक बुनावट है जो उन्हें पराये बच्चों की आँखों से अपने सपने देखना सिखाती है, और उन्हें पूरा करने; पंख और परवाज़ देने का हौंसला भी देती है। इन्हीं हौंसलों के 'उड़ान' की कहानी ही दरअसल इस पुस्तक की कहानी है। इस लिहाज़ से यह पुस्तक हमें भी ऐसे सपने देखने का हौंसला देती है और उन्हें पूरा करने का जुनून भी।

एक और बात, भाषायी और साहित्यिक मानदण्डों में यह पुस्तक भले ही उतनी समृद्ध न दिखे, किन्तु हक़ीकत में तब्दील किए गये एक सपने को जिस सच्चाई और रवानगी के साथ अजय सिंघल ने इस पुस्तक में बयाँ किया है, वह निश्चित तौर पर इसके पाठक को अन्दर तक उद्वेलित कर न केवल उसे कुछ सोचने को मजबूर करेगी, बल्कि उसे बीच में रूकने भी नहीं देगी।

अरिमर्दन सिंह गौर
जिला समन्वयक
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियाान
सहारनपुर

सृजन

हौंसलों की उड़ान . . .

गीली लकड़ियों की तरह बरसों सुलगते रहने से बेहतर है
क्षणभर में जल जाना और सब कुछ रौशन कर देना!

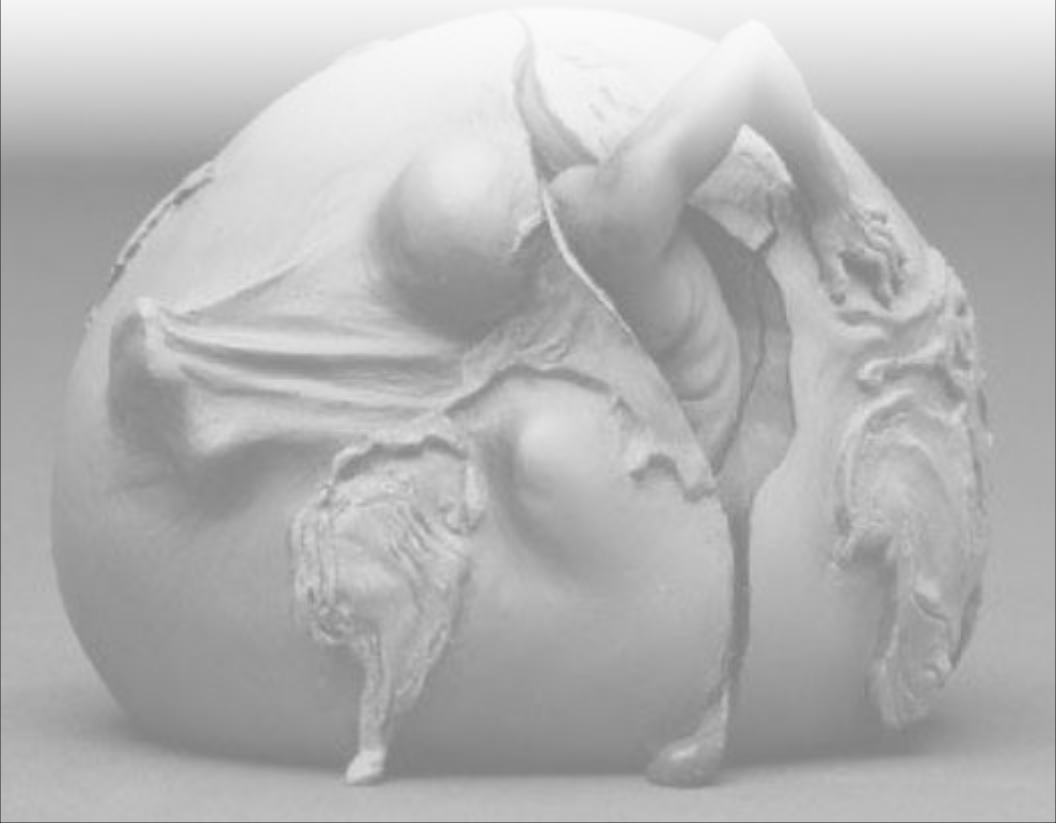

प्रकाशक एवं मुद्रक सृजन प्रिन्ट्स, दर्पण सिनेमा लेन, अम्बाला रोड, सहारनपुर (उ.प्र.)
फ़ोनः 0132-2613698, 2613699
ई-मेलः srijanprints@gmail.com

आवरण कमलनाथ
knath982@gmail.com

रेखांकन पंखुरी सिंघल

संस्करण प्रथम, नवम्बर, 2013
© अजय सिंघल
मूल्य 200.00 रुपये

उड़ान बाल एवं प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र
इंदिरा कैम्प कॉलोनी, लिंक रोड, निकट राकेश सिनेमा, सहारनपुर
दूरभाषः 9634200601, 9411457468, 8449000600
ई-मेलः info@panchtatva.in
वेबसाइटः www.panchtatva.in

मेरी उस दोस्त को
जिसके निस्वार्थ व्यक्तित्व ने
वह अंतदृष्टि दी
जिससे मैं
अपने जुनून को सकारात्मक
दिशा दे सका!

अपनी बात

'उड़ान' का सृजन स्त्री के गर्भ में पलते उस बालक के समान है, जिसके अस्तित्व में आते ही स्त्री उस से प्यार करने लगती है, बिना ये जाने की नौ माह बाद इसका रूप कैसा होगा और होगा भी या नहीं होगा। शायद यही फर्क है कुकुरमुत्तों की तरह बेतहाशा उगते स्कूलों और 'उड़ान' में। 'उड़ान' को शुरू करने वाले उसके भ्रूण को ही प्यार से सराबोर कर रहे थे। ऐसा लगता है कि देश की नामचीन हस्तियों से लेकर आम आदमी तक सभी इतिहास की परतें उघाड़ने में, इतिहास में किन्तु परन्तु ढूँढ़ने में इतने व्यस्त हैं कि ख़ुद से नया इतिहास गढ़ना भूल जाते हैं। हम भूल जाते हैं कि काल हमारा भी आँकलन कर रहा है और एक दिन हमारी भूमिका पर भी अँगुली उठाएगा।

'उड़ान' को पुस्तक के रूप में लिखते समय यह कोशिश की गयी कि हर छोटे-से-छोटे अनुभव को लिखा जाए। जिससे 'उड़ान' जैसी किसी और कोशिश की सफलता में यह पुस्तक सहयोग दे सके। 'उड़ान' के माध्यम से यह बताने की कोशिश की गयी है कि हमारे समाज को व्यवस्था परिवर्तन की जरूरत है। यह समय समाज के ताने-बाने से ख़ौफ खाने का नहीं बल्कि उस से सीखने का है ताकि हमारे कार्य करने की शक्ति बढ़ सके।

सृजन उन लोगों के लिए लिखी गयी है, जिनके हौंसले समय, कार्यकर्ताओं और पैसे के अभाव में दम तोड़ देते हैं। ऐसे लोग जिनके विचार और जिनकी ऊर्जा सिर्फ दिमाग की चाहरदीवारी में तड़प कर रह जाती है। सृजन कोशिश है यह बताने की, कि जब विचार नयी ऊर्जा के साथ चलना शुरू करता है, तब वो भले ही पानी की एक धारा की भाँति प्रतीत हो, लेकिन जुनून के ढलानों पर चलते समय उसे इतनी नयी धाराऐं मिलती जाती हैं कि उसका वेग एक प्राणदायिनी गंगा की भाँति हो जाता है। सृजन उन लोगों की आँखें खोलने के लिए भी एक मिसाल की तरह है, जो लोग करोड़ों रूपया कमा कर सभी संसाधनों पर कभी न छोड़ने वाला कब्जा जमा

लेते हैं और अपना नाम जोड़ने के लिए उनको बर्बाद कर देते हैं। सृजन उन उत्साही लोगों के लिए लिखी गयी है, जो लोग राख के ढेर से ज़िंदगी की मुस्कान खोजना चाहते हैं। सृजन इस बात को स्थापित करती है कि दुनिया की समस्त उपलब्धियों और बड़े-से-बड़े कार्य की शुरूआत एक विचार के मूर्तरूप में बदलने से हुई।

सृजन स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षकों, ऊर्जा से लबरेज़ विद्यार्थियों, अपने बच्चों की पढ़ाई की समस्या से जूझते अभिभावकों और समाज के लिए कुछ करने का जज्बा लिए लोगों के लिए एक उपयोगी पुस्तक साबित हो सकती है।

विशेष आभारः

लेखक न होते हुए भी 'उड़ान' की यात्रा का अनुभव एक पुस्तक के रूप में आ पाने का समस्त श्रेय सृजन प्रिंट्स के स्वामी श्री मनीष कच्छल, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के ज़िला समन्वयक श्री अरिमर्दन सिंह गौर, युवा, खोजी पत्रकार एवं लेखक श्री राजीव उपाध्याय, कला की दुनिया के प्रसिद्ध चित्रकार श्री कमलनाथ, निस्वार्थ बहुत से सामाजिक कार्यों से जुड़ी श्रीमती पायल गुप्ता एवं श्रीमती सोनिया शर्मा, 'उड़ान' के स्तम्भों के रूप में कार्यरत श्री प्रतीकमणि त्रिपाठी, श्री ललित सैनी, श्री अशोक कुमार, श्री अमल गर्ग, श्री शोरित शर्मा एवं समर्पण भाव से पूरी यात्रा में साथ रहने वाली मेरी पत्नी माधवी सिंघल के साथ-साथ उन समस्त प्राकृतिक शक्तियों को है, जिन्होंने इस सृजन हेतु हम सबको एक साथ उपयुक्त समय पर इकट्ठा किया।

7 दिसम्बर, 2013

सिंघल

(अजय सिंघल)

अनुक्रम

1. बाल श्रम 6
2. बच्चों का चयन 10
3. पहला कदम 14
4. इंदिरा कैम्प कॉलोनी 18
5. शुभारंभ 22
6. 'टचिंग लाइव्स' से प्रारंभिक टिप्स 26
7. छोटे कामों की बड़ी सिरदर्दी 30
8. स्कूल के लिए जगहः तौबा-तौबा! 34
9. अहं का टकराव 40
10. सांध्यकालीन कक्षाओं का नामकरण 44
11. 'उड़ान' का पहला दिन 48
12. 'उड़ान' के उद्देश्य एवं भविष्य का निर्धारण 52
13. हक़ीकत से टकराव 56
14. 'उड़ान' का पहला महीना 60
15. बच्चों को पढ़ाने के अनोख़े तरीके 64
16. बहुत छोटे बच्चों को पढ़ाने की चुनौती 72
17. जूते-चप्पलों की चोरी 76
18. फेसबुक का चमत्कार 80

19. कहानियों का जादू और लाइब्रेरी 84

20. 'गूँज' द्वारा बच्चों के कपड़े एवं खिलौने 88

21. हर रोज़ नयी परेशानी 92

22. रंगों का पागलपन 96

23. बस्ती के त्यौहार 100

24. बस्ती में फैली बुराइयाँ 104

25. शहर के छोटे-छोटे समूहों से सम्बन्ध 108

26. सिलाई सेन्टर की शुरूआत 112

27. पंखुरी एवं ख़ुशी द्वारा नृत्य प्रशिक्षण 118

28. 'हौंसला' का हौंसला 122

29. मुंबई से डा. सोनिया मैक्वानी की यात्रा 128

30. 'उड़ान' की इमारत 130

31. युवा कक्षाएं 134

32. 'उड़ान' के कारण व्यक्तिगत समस्याएं और लोगों की सोच 138

'सृजन' कहानी नही है, न ही सृजन कच्ची मिट्टी से भगवान की मूर्ति बना देने का कोई किस्सा है। सृजन नाली की तलछट में तुलसी का पौधा लगाने की कोशिश की तरह है। 'सृजन' कीचड़ से कमल को तोड़ कर लाने का हल्का-सा प्रयास भी नही है 'सृजन' कोशिश है उठती हुई बदबू के ढेर से फूलों को चुन-चुन कर लाने की। 'सृजन' कोशिश है उन फूलों से गुलदस्ता बनाने की।

मेरे भीतर का जुनून पिछले कुछ वर्षों से समाज में घटित होती संवेदनाहीन घटनाओं को देखता। उन घटनाओं पर संवेदना रहित समाज के साथ चाय की चुस्कियों के बीच होने वाली बहसों में मेरा आक्रोश शब्दों के साथ बाहर निकल जाता। कितने संवदेना शून्य घटना क्रम, कितनी बड़ी-बड़ी बातें और अपने आप चीजों के बदल जाने का ख्वाब, शायद हमारे समाज के लोगों के लिए समय बिताने और बहस करने का एक मुद्दा भर रह गया है। मैं भी अपनी इस बेबसी और आक्रोशित होते अंतस के साथ जीता हुआ रोजी-रोटी और सिर छुपाने की जद्दोजहद में फँसता चला जा रहा था। मैं भी संवदेना शून्य होने की ओर अग्रसर, चमत्कारिक रूप से सब बदल जाने का ख्वाब देखते हुए, अपने जीवन के चालीस वर्ष पूरे करने की ओर बढ़ रहा था कि तभी किसी झंझावात ने झकझोर कर समाज की सच्चाई को फिर से आँखों के सामने ला खड़ा किया कि कैसे हम समाज में जीते लोग समाज के लिए बेरूखी ओढ़ चुके हैं और ऐसे में चालीस की उम्र में मैंने ख़ुद में महसूस किया वो जुनून जो पच्चीस वर्ष की उम्र में जन्म लेता है। मेरे भीतर के इस जुनून ने मुझे फिर से वहीं ला खड़ा किया, जब मन में व्यवस्था और समाज के खिलाफ आक्रोश पैदा होता था।

आक्रोश अगर सकारात्मकता के साथ एक रास्ता दिखाने लगे तो कुछ करने को उत्साहित करता है और विसंगतियों को दूर कर देने का ज़ज्बा मन में भर देता है। पूना में **'वसुंधरा स्वच्छता अभियान'** को चलाने वाले श्री अनिल गायकवाड़ से मेरी एक दोस्त पायल ने मेरी दो-तीन बार फोन पर बात कराई और उनसे की गयी बातचीत ही मेरे जुनून को जमीन देने की दिशा में पहला कदम साबित हुई। हमारा जुनून और अनिल गायकवाड़ एवं पायल गुप्ता का लगातार उत्साहवर्धन उस जज्बे को मन में भरने लगा, जो जज़्बा कुछ कर गुजरता है। इसी आक्रोश और जुनून की जुगलबंदी के कारण दोस्तों के साथ 16 मई 2007 को जन्म हुआ **'क्रेज़ीग्रीन'** का। 'क्रेज़ीग्रीन' कैसे हम सबके जीवन को बदलने वाला था, इसका आभास हम

में किसी को नही था। 'क्रेज़ीग्रीन' का गठन करते समय यह सोचा गया कि, "क्यों सिर्फ बहस और बातें। चलो अब कुछ बदलने का ख़्वाब देखें और उन्हें पूरा करें।" इसी के साथ हमने बहुत छोटे स्तर पर पर्यावरण जागरूकता के लिए काम करना शुरू किया और साथ-साथ किसी-किसी पार्क में वृक्षारोपण भी करने लगे। तीन साल से ज्यादा समय तक 'क्रेज़ीग्रीन' यही करता रहा, लेकिन कहते हैं लगातार पत्थरों पर बूंदों के गिरते रहने से उनमें भी रास्ता बन जाता है और इसी तरह हमारी निरंतरता ने हमें भी रास्ते दिखाने शुरू कर दिए। इन तीन सालों में कैसे हमारी वेबसाईट बनी और कब मैं इन सब कामों को करते रहने के साथ साथ एक ब्लॉग **'अंतर्मन'** भी लिखने लगा इसका पता ही नहीं चला।

इस ब्लॉग में मैं ज़िंदगी के अपने अनुभवों को शब्दों में उतारता हुआ बस लिखे जा रहा था। अंतर्मन को पढ़ने वाले भी एक-दो लोग ही थे। जब कभी कोई भूले-बिसरे उस पर कमेन्ट देता तो मुझे ख़ुशी होती, लोगों को कह-कह कर उसको पढ़वाता और नया लिखने को उत्साहित होता। ख़ुद को बार-बार दिलासा देता कि कहीं कोई तो कभी ऐसा जिसका अन्तर्मन इन सब को पढ़कर जागेगा। ऐसे में स्कूल न जाने को लेकर पढ़ी कुछ पंक्तियों के पश्चात् मैंने अपना एक ब्लॉग लिखा 'बालश्रम'। बालश्रम कोशिश थी समाज के लोगों से यह सवाल पूछने की, कि क्यों दुनिया का एक बहुत बड़ा सवाल कि हज़ारों बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं, समाज के लिए एक सवाल नहीं है, क्यों बस हम देखते हैं बच्चों को भीख मांगते, कूड़ा बीनते, ढाबों में काम करते, लेकिन कभी नहीं सोचते कि क्यों ये स्कूल नहीं जाते। उस ब्लॉग की लिखी ये पंक्तियाँ शारजाह में बैठे मेरे एक मित्र को आंदोलित कर गयीं और उन पंक्तियों ने बहुत से लोगों के जीवन को बदलने में जो चमत्कारिक और अद्भुत भूमिका निभायी, उसको आज लगभग तीन साल बाद कलमबद्ध करना इसलिए जरूरी जान पड़ता है क्यूंकि लगता है फिर से कोई 'क्रेज़ीग्रीन' दुनिया के किसी और कोने में जब ऐसी ही यात्रा शुरू करे तो उसको प्रारम्भिक चुनौतियों का पहले से ही ज्ञान

हो।

'सृजन' कहानी है उसी यात्रा की जो 'बालश्रम' ने शुरू की और चल रही है ज़िंदगी को बदलते हुए, न सिर्फ उन बच्चों की ज़िंदगी को जो बचपन के अर्थ से परिचित ही न थे, बल्कि उन लोगों की भी जिन्होंने इस आंदोलन को शुरू करने में अपने सपनों, समय और सारी युक्तियों को प्रयोग कर दिया। सृजन को शुरू करने से पहले उन पंक्तियों का उल्लेख करना ज़रूरी है, जो इस आंदोलन की नींव बनी। कलम की असीमित शक्ति को इन पंक्तियों ने सिद्ध किया। ये पक्तियाँ एक बस्ती के लिए आंदोलन का रूप लेकर आयी और उस बस्ती में रहने वाली हर ज़िंदगी के जीवन में परिवर्तन लेकर आयी। कुछ लोगों के प्रयास से एक पूरी बस्ती ने सही मायनों में आज़ादी के पैंसठ साल बाद दुनिया को समझना शुरू किया।

वृक्षारोपण करते क्रेज़ीग्रीन के सदस्य

विचार एक बीज की तरह होता है, किसी भी विचार रूपी बीज को हज़ारों लोगों के दिमाग की उपजाऊ मिट्टी में डाल दो। जब भी सही समय आएगा वो बीज अपने आप अंकुरित हो जाएगा। दुनिया के सभी वट वृक्ष एक छोटे से बीज से ही तो पैदा हुए हैं। कोई नहीं जानता था कि विचार के एक ऐसे ही बीज को हज़ारों मील दूर से मिलने वाले खाद और पानी से ही अपना आकार लेना था।

बाल श्रम

सड़क पर चलते बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं।
साइकिल पर टिफिन लटकाए बच्चे,
दुकान में चाय के बर्तन धोते बच्चे,
सबके घरों में झाड़ू पोछा करते बच्चे,
लाखों बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं।

क्या सभी खिलौने बिक गए हैं बाजार के ?
क्या सभी मैदानों को खोद दिया गया है ?
क्या सभी बस्तों में सामान भर दिया गया है ?
क्या सभी किताबों को दीमकें खा गयी हैं ?
क्या सभी मुस्कानें किसी को बेच दी गयी हैं ?

सिगरेट पीते बच्चे भी स्कूल नहीं जा रहे हैं,
बोझा ढोते बच्चे भी स्कूल नहीं जा रहे हैं,
कूड़ा बीनते बच्चे भी स्कूल नहीं जा रहे हैं,
जिस्म बेचते बच्चे भी स्कूल नहीं जा रहे हैं,
सड़क चलते बच्चे भी स्कूल नहीं जा रहे हैं।

शायद सभी स्कूल दुकान बना दिए गए हैं,
शायद सभी लोगों का जमीर बेच दिया गया है,
शायद ऊपर वाले ने देखना बंद कर दिया है,
शाायद लोगों ने समाज में रहना बंद कर दिया है,
शायद धरती से इंसान खत्म हो गए हैं।

शारजाह में कार्यरत सहारनपुर के श्री संजय नागपाल जी द्वारा जब ये पंक्तियाँ पढ़ी गयी तो उन्होंने सीधे फोन द्वारा मुझे कहा कि वो उन पाँच बच्चों की स्कूल फीस देना चाहते हैं, जो गरीबी के कारण स्कूल नहीं जा पाते। अचानक से आये फोन ने एक पल तो मुझे समझने का मौका नहीं दिया लेकिन कुछ ही समय पश्चात फोन ने मन के अंदर विचारों की ऐसी झड़ी लगा दी कि ऐसा करता हूँ, ये करता हूँ, वो करता हूँ।

"गरीब बच्चे कहीं-कहीं से ढूंढ कर लाऊँगा,"

"नहीं, गरीब बच्चे तो हमारे आस-पास भी मिल जायेंगे।"

"हमारी काम वाली का बच्चा कैसा रहेगा?"

और न जाने क्या क्या . . .

मन ऐसा करने लगा जैसे बाल सुलभ मन करता है। अपनी थोड़ी-सी कामयाबी पर मेरा मन सपने बुनने लगा था। और भला हो भी क्यों न, आज कोई एक व्यक्ति मेरे जुनून से ख़ुद को झकझोरा हुआ महसूस कर रहा था। मुझे लग रहा था, जैसे मैं अब न जाने कितने नए लेख लिखूंगा जो पूरी दुनिया के लोगों को हिलाकर रख देंगे। शायद मन में दबी किसी इच्छा के पूरा हो जाने के कारण यह एक अति उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया मात्र थी।

आज तीन साल से भी ज्यादा समय बाद पहली बार कोई ऐसा मिला था जो हमारे साथ काम करना चाहता था। कहते हैं विचार एक बीज की तरह होता है, किसी भी विचार रूपी बीज को हज़ारों लोगों के दिमाग की उपजाऊ मिट्टी में डाल दो। जब भी सही समय आएगा वो बीज अपने आप अंकुरित हो जाएगा। दुनिया के सभी वट वृक्ष एक छोटे से बीज से ही तो पैदा हुए हैं। कोई नहीं जानता था कि विचार के एक ऐसे ही बीज को हज़ारों मील दूर से मिलने वाले खाद और पानी से ही अपना आकार लेना था।

शाम होते-होते मैंने 'क्रेज़ीग्रीन' के दूसरे सदस्यों से भी इस सम्बन्ध में

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below